

रविवार 1 नवंबर, 2026

विषय — हमेशा की सजा

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 136: 1

"यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है, और उसकी करुणा सदा की है।"

उत्तरदायी अध्ययन: इब्रानियों 12: 5-8, 28

- ⁵ और तुम उस उपदेश को जो तुम को पुत्रों की नाई दिया जाता है, भूल गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़।
- ⁶ क्योंकि प्रभु, जिस से प्रेम करता है, उस की ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उस को कोड़े भी लगाता है।
- ⁷ तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो: परमेश्वर तुम्हें पुत्र जान कर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है, वह कौन सा पुत्र है, जिस की ताड़ना पिता नहीं करता?
- ⁸ यदि वह ताड़ना जिस के भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे!
- ²⁸ इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिस के द्वारा हम भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना कर सकते हैं जिस से वह प्रसन्न होता है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. योना 1: 1-12, 15-17

- ¹ यहोवा का यह वचन अमितै के पुत्र योना के पास पहुंचा,
- ² उठ कर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विरुद्ध प्रचार कर; क्योंकि उसकी बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई है।
- ³ परन्तु योना यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को भाग जाने के लिये उठा, और यापो नगर को जा कर तर्शीश जाने वाला एक जहाज पाया; और भाड़ा देकर उस पर चढ़ गया कि उनके साथ हो कर यहोवा के सम्मुख से तर्शीश को चला जाए॥
- ⁴ तब यहोवा ने समुद्र में एक प्रचण्ड आंधी चलाई, और समुद्र में बड़ी आंधी उठी, यहां तक कि जहाज टूटने पर था।

- 5 तब मल्लाह लोग डर कर अपने अपने देवता की दोहाई देने लगे; और जहाज में जो व्यापार की सामग्री थी उसे समुद्र में फेंकने लगे कि जहाज हल्का हो जाए। परन्तु योना जहाज के निचले भाग में उतरकर सो गया था, और गहरी नींद में पड़ा हुआ था।
- 6 तब मांझी उसके निकट आकर कहने लगा, तू भारी नींद में पड़ा हुआ क्या करता है? उठ, अपने देवता की दोहाई दे! सम्भव है कि परमेश्वर हमारी चिन्ता करे, और हमारा नाश न हो॥
- 7 तब उन्होंने आपस में कहा, आओ, हम चिट्ठी डाल कर जान लें कि यह विपत्ति हम पर किस के कारण पड़ी है। तब उन्होंने चिट्ठी डाली, और चिट्ठी योना के नाम पर निकली।
- 8 तब उन्होंने उस से कहा, हमें बता कि किस के कारण यह विपत्ति हम पर पड़ी है? तेरा उद्यम क्या है? और तू कहां से आया है? तू किस देश और किस जाति का है?
- 9 उसने उन से कहा, मैं इब्री हूं; और स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जिसने जल स्थल दोनों को बनाया है, उसी का भय मानता हूं।
- 10 तब वे निपट डर गए, और उस से कहने लगे, तू ने यह क्या किया है? वे जान गए थे कि वह यहोवा के सम्मुख से भाग आया है, क्योंकि उसने आप ही उन को बता दिया था॥
- 11 तब उन्होंने उस से पूछा, हम तेरे साथ क्या करें जिस से समुद्र शान्त हो जाए? उस समय समुद्र की लहरें बढ़ती ही जाती थीं।
- 12 उसने उन से कहा, मुझे उठा कर समुद्र में फेंक दो; तब समुद्र शान्त पड़ जाएगा; क्योंकि मैं जानता हूं, कि यह भारी आंधी तुम्हारे ऊपर मेरे ही कारण आई है।
- 15 तब उन्होंने योना को उठा कर समुद्र में फेंक दिया; और समुद्र की भयानक लहरें थम गईं।
- 16 तब उन मनुष्यों ने यहोवा का बहुत ही भय माना, और उसको भेंट चढ़ाई और मन्त्रतें मानीं॥
- 17 यहोवा ने एक बड़ा सा मगरमच्छ ठहराया था कि योना को निगल ले; और योना उस मगरमच्छ के पेट में तीन दिन और तीन रात पड़ा रहा॥

2. योना 2: 1, 2, 9 (म बलिदान दिनेछु।), 10

- 1 तब योना ने उसके पेट में से अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर के कहा,
- 2 मैं ने संकट में पड़े हुए यहोवा की दोहाई दी, और उसने मेरी सुन ली है; अधोलोक के उदर में से मैं चिल्ला उठा, और तू ने मेरी सुन ली।
- 9 परन्तु मैं ऊंचे शब्द से धन्यवाद कर के तुझे बलिदान चढ़ाऊंगा; जो मन्त्रत मैं ने मानी, उसको पूरी करूंगा। उद्धार यहोवा ही से होता है।
- 10 और यहोवा ने मगरमच्छ को आज्ञा दी, और उसने योना को स्थल पर उगल दिया॥

3. योना 3: 1-3 (से 1st .), 4-6, 10 (से ;)

- 1 तब यहोवा का यह वचन दूसरी बार योना के पास पहुंचा,
- 2 उठ कर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और जो बात मैं तुझ से कहूंगा, उसका उस में प्रचार कर।
- 3 तब योना यहोवा के वचन के अनुसार नीनवे को गया।
- 4 और योना ने नगर में प्रवेश कर के एक दिन की यात्रा पूरी की, और यह प्रचार करता गया, अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा।

- 5 तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभी ने टाट ओढ़ा।
- 6 तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुंचा; और उसने सिंहासन पर से उठ, अपना राजकीय ओढ़ना उतार कर टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया।
- 10 जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया।

4. यूहन्ना 8: 1, 2 (से 1st), 3-11

- 1 परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया।
- 2 और भोर को फिर मन्दिर में आया, और सब लोग उसके पास आए; और वह बैठकर उन्हें उपदेश देने लगा।
- 3 तब शास्त्री और फरीसी एक स्त्री को लाए, जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उस को बीच में खड़ी करके यीशु से कहा।
- 4 हे गुरु, यह स्त्री व्यभिचार करते ही पकड़ी गई है।
- 5 व्यवस्था में मूसा ने हमें आज्ञा दी है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह करें: सो तू इस स्त्री के विषय में क्या कहता है?
- 6 उन्होंने उस को परखने के लिये यह बात कही ताकि उस पर दोष लगाने के लिये कोई बात पाएं, परन्तु यीशु झुककर उंगली से भूमि पर लिखने लगा।
- 7 जब वे उस से पूछते रहे, तो उस ने सीधे होकर उन से कहा, कि तुम में जो निष्पाप हो, वही पहिले उस को पत्थर मारे।
- 8 और फिर झुककर भूमि पर उंगली से लिखने लगा।
- 9 परन्तु वे यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक एक करके निकल गए, और यीशु अकेला रह गया, और स्त्री वहीं बीच में खड़ी रह गई।
- 10 यीशु ने सीधे होकर उस से कहा, हे नारी, वे कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी।
- 11 उस ने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं: यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना॥

5. यशायाह 54: 10

- 10 चाहे पहाड़ हट जाएं और पहाड़ियां टल जाएं, तौभी मेरी करूणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है॥

6. यिर्मयाह 31: 3 (हाँ) (से :)

- 3 मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ;

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 522: 30-31

क्या सृष्टिकर्ता अपनी ही रचना की निंदा करता है?

2. 6: 3 (दिव्य)-5, 11-22

ईश्वरीय प्रेम मनुष्य को सुधारता है और नियंत्रित करता है। पुरुष क्षमा मांग सकते हैं, लेकिन यह ईश्वरीय सिद्धांत केवल पापी को सुधारता है।

पाप के परिणाम के रूप में पीड़ित होने के लिए, पाप को नष्ट करने का साधन है। जब तक भौतिक जीवन में पाप और पाप नष्ट नहीं हो जाते, तब तक पाप का हर आनंद उसके दर्द के बराबर होगा। स्वर्ग तक पहुँचने के लिए, हम होने के दिव्य सिद्धांत को समझना चाहिए।

"भगवान प्यार है।" इससे अधिक हम पूछ नहीं सकते, उच्च हम नहीं देख सकते हैं, आगे हम नहीं जा सकते। यह मानने के लिए कि ईश्वर क्षमा करता है या पाप को दंडित करता है जैसा कि उसकी दया की मांग की गई है या बिना शर्त के, प्यार को गलत समझना और प्रार्थना को अपराध के लिए सुरक्षा-वाल्फ बनाना है।

3. 182: 19-26

भौतिक कानून का पालन करने से आध्यात्मिक कानून का पूर्ण पालन होता है, — वह कानून जो भौतिक स्थितियों पर काबू पाता है और सामग्री को मन के पैरों के नीचे रखता है। इंसान बीमारों को ठीक करने के लिए ईश्वरीय मन से प्रार्थना करते हैं, और तुरंत ही भौतिक साधनों का इस्तेमाल करके मन की मदद को रोक देते हैं; इस तरह वे खुद के और अपनी प्रार्थनाओं के खिलाफ काम करते हैं और मन की पवित्र शक्ति को दिखाने की ईश्वर-प्रदत्त क्षमता को नकारते हैं।

4. 19: 26-28

यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

5. 183: 16-25

अस्थायी कानून, जिसके परिणामस्वरूप परेशानी और बीमारी होती है, उनके कानून नहीं हैं, सत्य के वैध और एकमात्र संभव कार्य के लिए सद्भाव का उत्पादन है। प्रकृति के नियम आत्मा के नियम हैं; लेकिन नश्वर आमतौर पर कानून के रूप में पहचानते हैं जो आत्मा की शक्ति को छुपाता है। डिवाइन माइंड सही ढंग से मनुष्य की संपूर्ण आज्ञाकारिता, स्नेह और शक्ति की माँग करता है। किसी भी कम निष्ठा के लिए कोई आरक्षण नहीं किया जाता है। सत्य का पालन मनुष्य को शक्ति और सामर्थ्य देता है। त्रुटि के अधीन होने से शक्ति का नुकसान होता है।

6. 19: 17-26

पश्चात्ताप और पीड़ा के हर दर्द, सुधार के लिए हर प्रयास, हर अच्छा विचार और काम, हमें पाप के लिए यीशु के प्रायश्चित्त को समझने और उसकी प्रभावकारिता की सहायता करने में मदद करेगा; लेकिन अगर पापी प्रार्थना और पश्चात्ताप करना, पाप करना और क्षमा करना जारी रखता है, तो उसके पास प्रायश्चित्त में बहुत कम हिस्सा है, — परमेश्वर के साथ एकता में, - क्योंकि उसके पास व्यावहारिक पश्चात्ताप का अभाव है, जो हृदय को सुधारता है और

मनुष्य को ज्ञान की इच्छा करने में सक्षम बनाता है। जो लोग प्रदर्शन नहीं कर सकते, कम से कम भाग में, हमारे गुरु की शिक्षाओं और अभ्यास के दिव्य सिद्धांत का भगवान में कोई हिस्सा नहीं है।

7. 184: 6-15

विश्वास विश्वास के परिणाम उत्पन्न करता है, और इसके द्वारा लगाए गए दंड तब तक बने रहते हैं जब तक विश्वास और उससे अविभाज्य होते हैं। उपचार में समस्या की तह तक जांच करना, विश्वास की उस त्रुटि का पता लगाना और उसे अस्वीकार करके बाहर निकालना शामिल है जो एक नश्वर विकार उत्पन्न करती है, गलत विश्वास को कभी भी कानून की उपाधि से सम्मानित नहीं करना और न ही उसका पालन करना। सत्य, जीवन और प्रेम ही मनुष्य पर एकमात्र वैध और शाश्वत मांग हैं, और वे आध्यात्मिक कानून निर्माता हैं, जो ईश्वरीय विधियों के माध्यम से आज्ञाकारिता को लागू करते हैं।

8. 14: 6-11

"प्रभु के साथ वर्तमान" होना, केवल भावनात्मक परमानंद या विश्वास नहीं है, बल्कि वास्तविक प्रदर्शन और जीवन की समझ है जैसा कि क्राइस्टियन साइंस में सामने आया है। "प्रभु के साथ" होना ईश्वर के कानून का पालन करना है, परमात्मा द्वारा पूर्ण रूप से शासित होना, - आत्मा द्वारा, पदार्थ द्वारा नहीं।

9. 242: 1-20

पश्चाताप, आध्यात्मिक बपतिस्मा, और उत्थान के माध्यम से, नश्वर अपने भौतिक विश्वासों और झूठी व्यक्तित्व को बंद कर देते हैं। यह केवल समय का सवाल है "कि छोटे से ले कर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे।" पदार्थ के दावों से इंकार आत्मा की खुशियों की ओर, मानव स्वतंत्रता और शरीर पर अंतिम विजय की ओर एक बड़ा कदम है।

स्वर्ग के लिए एक रास्ता है, सद्भाव; और ईश्वरीय विज्ञान में मसीह हमें इस मार्ग को दिखाता है। कोई और वास्तविकता नहीं है, अच्छे ईश्वर और उसके प्रतिबिंब को जानने और इंद्रियों के दर्द और सुख से श्रेष्ठ होने के अलावा जीवन की कोई अन्य चेतना नहीं है।

स्व-प्रेम एक ठोस शरीर की तुलना में अधिक अपारदर्शी है। एक रोगी ईश्वर की आज्ञाकारिता में, प्रेम के सार्वभौमिक विलायक के साथ भंग करने के लिए हमें श्रम करना चाहिए, - आत्म-इच्छा, आत्म-औचित्य, और आत्म-प्रेम, - जो आध्यात्मिकता के खिलाफ युद्ध करता है और पाप का कानून मौत।

10. 322: 26-29

पदार्थ के सपोसिटिटिव जीवन में विश्वास के तेज अनुभव, साथ ही साथ हमारी निराशा और निरंतर व्यर्थ, हमें थका हुआ बच्चों की तरह दिव्य प्रेम की ओर मोड़ते हैं।

11. 327: 1-7, 9-13 (से 2nd .)

सुधार यह समझने से होता है कि बुराई में कोई खुशी नहीं है, और विज्ञान के अनुसार अच्छे के लिए स्नेह प्राप्त करने से भी, जो अमर तथ्य को उजागर करता है कि न तो खुशी और न ही दर्द, भूख और न ही जुनून, या बात में मौजूद

हो सकता है, जबकि दिव्य मन आनंद और पीड़ा, या भय और मानव मन के सभी पापी भूखों की झूठी मान्यताओं को नष्ट कर सकता है।

बुराई कभी-कभी किसी व्यक्ति के अधिकार की सबसे बड़ी अवधारणा होती है, जब तक कि अच्छाई पर उसकी पकड़ मजबूत नहीं हो जाती। तब वह दुष्टता में आनंद खो देता है, और यह उसकी पीड़ा बन जाती है। पाप के दुख से बचने का तरीका है, पाप को रोकना। और कोई रास्ता नहीं है।

12. 11: 1 (बिना)-4

फिर "आप गलत पूछते हैं।" सजा के बिना, पाप कई गुना होगा। यीशु की प्रार्थना, "हमें हमारे पापों को माफ कर दो," क्षमा की शर्तों को भी निर्दिष्ट किया। व्यभिचारी स्त्री को क्षमा करते हुए उसने कहा, "जाओ, और अब पाप मत करो।"

13. 496: 5-8

आप सीखेंगे कि क्रिश्चियन साइंस में पहला कर्तव्य ईश्वर का पालन करना, एक मन रखना और दूसरे को अपने जैसा प्यार करना है।

14. 35: 30 केवल

प्रेम की योजना पापी को सुधारना है।

15. 140: 7-12

भौतिक रूप से नहीं बल्कि आध्यात्मिक रूप से हम उसे दिव्य मन, जीवन, सत्य और प्रेम के रूप में जानते हैं। जब हम ईश्वरीय प्रकृति को समझ लेते हैं और उसी रूप से प्रेम करते हैं, तो हम उस अनुपात को स्वीकार करेंगे और उसका पालन करेंगे, जो कि नगरपालिका से अधिक नहीं, बल्कि हमारे ईश्वर के सान्निध्य में आनन्दित होगा।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठीसुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6